

ग्लैडियोलस: भारतीय किसानों के लिए फूलों की खेती का नया विकल्प

धन सिंह¹ और बृजेशकुमार²

¹पीएच.डी. शोधार्थी, ²सह-आचार्य, बागवानीविभाग, आर.बी.एस.कॉलेज, बिचपुरी, डॉ. बी. आर.

अम्बेडकरविश्वविद्यालय, आगरा

ग्लैडियोलस फूलों की दुनिया का एक बेहद लोकप्रिय और आकर्षक पौधा है। इसे अक्सर कंदीय फूलों की रानी कहा जाता है। इसकी मांग सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों, विशेषकर यूरोपीय देशों में भी लगातार बढ़ रही है। शरद ऋतु में इस फूल की खपत सबसे अधिक होती है। ग्लैडियोलस की खूबसूरती और टिकाऊ क्षमता इसे महंगा और पसंदीदा फूल बनाती है। इसके फूलों और कंदों की मांग प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों से इसका उत्पादन और क्षेत्रफल तेजी से बढ़ा है। भारतीय समाज में मध्यम वर्ग के जीवन स्तर और आय में सुधार ने भी इसकी लोकप्रियता को और बढ़ावा दिया है। पहले यह फसल मुख्य रूप से ठंडे इलाकों, खासकर पहाड़ी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में ही उगाई जाती थी। लेकिन आधुनिक खेती की तकनीकों, उन्नत प्रबंधन और बेहतर किस्मों की उपलब्धता के कारण आज इसे दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में भी बड़े पैमाने पर व्यावसायिक रूप से उगाया जा रहा है। ग्लैडियोलस के फूल अपनी सुंदरता और आकर्षण के कारण आज हर अवसर पर पसंद

किए जाते हैं। शादी-विवाह, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक उत्सव, जन्मदिन, मदर्स डे, वैलेंटाइन डे, होली, दिवाली और दशहरा जैसे पर्व इन फूलों के बिना अधूरे से लगते हैं। घर की सजावट से लेकर बुके बनाने तक इनका प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। बढ़ती मांग और उपयोगिता ने ग्लैडियोलस को एक व्यावसायिक फूल का दर्जा दिला दिया है। इसके लंबे स्पाइक पर खिले हुए फ्लोरेट्स कई रंगों और आकारों में उपलब्ध होते हैं, जो हर किसी का ध्यान आकर्षित करते हैं। इन फूलों की सबसे बड़ी खासियत है इनकी टिकाऊ क्षमता और उत्कृष्ट गुणवत्ता। लंबे समय तक ताजगी बनाए रखने के कारण ये न केवल घरेलू सजावट के लिए बल्कि भारतीय बाजार में भी बेहद लोकप्रिय हो गए हैं। यही वजह है कि ग्लैडियोलस की खेती किसानों के लिए लाभकारी और उपभोक्ताओं के लिए आकर्षक विकल्प बन चुकी है।

प्रमुख विकसित किस्में: ग्लैडियोलस की खेती के लिए भारत में कई संस्थानों ने विशेष किस्में विकसित की हैं। इसके अलावा कुछ विदेशी किस्में भी लोकप्रिय हैं।

संस्थान

ग्लैडियोलस की किस्में

भारतीय बागवानी अनुसंधान अर्का गोल्ड, अर्का अमर, अर्का रजनी, अर्का प्रथम संस्थान, बेंगलुरु

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, पंजाब मोहिनी, पंजाब फ्लेम, पंजाब लेमन डिलाइट, पंजाब लुधियाना श्यामली, पंजाब इलिगन्स,

राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान ज्वाला, अर्चना, गजल, मनहर, मोहिनी, त्रिलोकी, मनीषा संस्थान, लखनऊ

भारतीय कृषि अनुसंधान पूसा मनमोहक, पूसा सिंदूरी, पूसा शुभम, पूसा शांति, पूसा रेड संस्थान, नई दिल्ली वैलेंटाइन, पूसा रजत, पूसा उन्नति, पूसा सुजना

विदेशी किस्में अमेरिकन ब्यूटी, स्नो प्रिंसेस, प्रिंसीला



स्रोत: पूसा पूसा पूसा
<https://iari.res>. सिंदूरी मनमोहक शांति

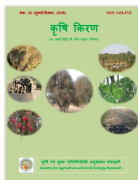
उपयुक्त जलवायु

ग्लैडिओलस की अच्छी वृद्धि के लिए ठंडी जलवायु आवश्यक है। इसकी खेती के लिए 16° से 25° से. तापमान उपयुक्त रहता है। खुले व धूपदार स्थान पर पर्याप्त सिंचाई और जल निकास व्यवस्था होनी चाहिए। यदि तापमान 6° से. से नीचे चला जाए तो पौधों को ठंड से नुकसान हो सकता है। यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है, परंतु अच्छी जलनिकासी वाली

दोमट भूमि जिसका पीएच 5.5 से 6.5 हो, सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

खेत की तैयारी और खाद

खेती शुरू करने से पहले खेत को अच्छी तरह तैयार करना जरूरी है। इसके लिए गोबर की सड़ी हुई खाद लगभग 25-30 टन प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला देनी चाहिए। इसके बाद खेत को कई बार जुताई करके भुरभुरा और समतल बना लेना चाहिए। इससे पौधों में समान रूप से अंकुरण और विकास होता है तथा उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। संतुलित उर्वरक के रूप में लगभग 100-120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80-100



किलोग्राम फास्फोरस और 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना लाभकारी है।

रोपाई का समय

ग्लैडिओलस की रोपाई का सबसे अनुकूल समय सितंबर से लेकर अक्टूबर माह तक माना जाता है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश की तराई वाले क्षेत्रों में इस अवधि में रोपाई करने पर उत्कृष्ट उत्पादन प्राप्त होता घनकन्दों की मात्रा कई बातों पर निर्भर करती है जैसे कि पौधे की दूरी, घनकन्द का आकार, लगाने का तरीका आदि। सामान्यतः 50-60 हजार घनकन्द प्रति एकड़ पर्याप्त होते हैं। पौधे से पौधा 15 से.मी., पंक्ति से पंक्ति की दूरी 50 से.मी. तथा 8-10 से.मी. गहराई पर बोना चाहिए। घनकन्द का आकार भी 4-6 से.मी. हो तो अच्छी गुणवत्ता के फूल उत्पादित होंगे। रोपाई के बाद हल्की सिंचाई करें।

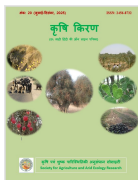
फूलों की स्पाइक काटना एवं घनकन्दों की खुदाई

जब फूलों को दूर स्थित बाजार में भेजना हो, तो उनके प्रथम फ्लोरेट्स (कली/पंखुड़ी) खुलने लगते समय स्पाइक को तेज चाकू या कैंची से सावधानीपूर्वक काटा जाता है। स्पाइक काटते समय पौधे की 3-4 पत्तियाँ नीचे की ओर सुरक्षित छोड़ना आवश्यक है। सामान्यतः 24 स्पाइकों का एक बंडल बनाया जाता है, जिसे धागे या रबर बैंड की सहायता से बांधकर व्यवस्थित कर दिया जाता है। इन बंडलों को 120×60×30 से.मी. आकार के

बक्सों में पैक किया जाता है। बक्सों में हवा आने-जाने के लिए जगह-जगह छोटे-छोटे छिद्र बनाए जाते हैं। इसके बाद पैकिंग पूरी होने पर इन्हें फ्रिजरेटेड ट्रकों में लोड कर बाजार तक भेज दिया जाता है। फूल खिलने के लगभग डेढ़ से दो महीने बाद जब पत्तियों का रंग पीला पड़ने लगे या सूखने लगे, तब घनकन्द (Corms) की खुदाई की जाती है। खुदाई के बाद घनकन्दों को 2% बाविस्टिन (Bavistin) घोल में लगभग 30-40 मिनट तक डुबोकर रोगों से बचाने हेतु उपचारित किया जाता है। तथा छाया में सुखायें। कंदों को छाया में सुखाने के बाद लगभग 4.5 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले कोल्ड स्टोरेज में 2-3 महीने तक रखा जाता है। ऐसा करने से उनकी सुप्तावस्था समाप्त हो जाती है और वे बेहतर अंकुरण के लिए तैयार हो जाते हैं।

उत्पादन और आय

फूलों का उत्पादन कई बातों पर निर्भर करता है - जैसे पौधों के बीच की दूरी, कंदों का आकार, मिट्टी की उर्वरता और मौसम। यदि सभी कृषि क्रियाएँ सही ढंग से की जाएँ तो प्रति हेक्टेयर लगभग ढाई लाख फूलों की स्पाइक मिल सकती है। इसी के साथ उतने ही लगभग घनकंद भी प्राप्त होते हैं। खर्च घटाने के बाद प्रति हेक्टेयर चार लाख रुपये तक की आय संभव है। हालांकि, यह लाभ बाजार में मिलने वाली कीमत पर निर्भर करता है। पहले साल की तुलना में दूसरे और



तीसरे साल में आय और अधिक बढ़ जाती है।

कीटों से बचाव

ग्लैडियोलस की फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कई कीट पाए जाते हैं, जैसे माहूँ, तना बेधक, थ्रिप्स और लूपर्स। ये कीट पौधों की पत्तियों और फूलों को कमजोर बना देते हैं। इन पर नियंत्रण पाने के लिए 0.2% मैलाथियान, मेटासिस्टाक्स या नुवान का छिड़काव प्रभावी माना जाता है।

रोगों की रोकथाम

ग्लैडियोलस की सबसे हानिकारक बीमारी *फ्यूजेरियम विल्टयाकंद विगलन* है। इस रोग से कंद सड़ने लगते हैं, तना और पत्तियाँ विकृत होकर पीली पड़ जाती हैं और फूलों का रंग फीका हो जाता है। इस समस्या से बचाव के लिए कंदों को बोने से पहले 0.3% बाविस्टिन घोल में 30-40 मिनट तक डुबोकर छाया में सुखाना चाहिए।

फसल सुरक्षा उपाय

बेहतर उत्पादन के लिए खड़ी फसल पर भी समय-समय पर छिड़काव जरूरी है। एक बार डाईथेन एम-45 और दूसरी बार 0.2% बाविस्टिन का छिड़काव करने से रोग और कीट दोनों पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। यह छिड़काव फूल आने से 15-20 दिन पहले तक किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

ग्लैडियोलस की खेती कम लागत में अधिक लाभ देने वाली है। यह न केवल किसानों की आय बढ़ाने का एक बेहतर विकल्प है बल्कि फूलों के व्यापार में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी व्यवस्थित खेती से किसान निर्यात स्तर की गुणवत्ता वाले फूल उत्पादन कर सकते हैं।